



# हवाओं में ज़हर है

विनोद कुमार शर्मा

नया विकल्प प्रकाशन

94/52, तुलसी नगर, भोपाल

— शशि शर्मा  
 प्रथम संस्करण 1991  
 मूल्य 15 रुपये  
 प्रकाशक नया विमल्य प्रकाशन  
 94/52, तुलसी नगर, भापाल  
 आवरण योगेन्द्र कुमार  
 मुद्रक प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स ए 21 झिलमिल  
 इण्डस्ट्रियल एरिया, माहूदरा, दिल्ली 110095

---

HAWAON MEIN ZEHR HAI (Ghazals)  
 by Vinod Kumar Sharma Price Rs 15 00

---

‘हैं कहा वा लाग, हर एक पूछता है  
जा हवाओं में जहर को छानत हैं

—बिनोद कुमार शर्मा

वरिष्ठ रचनाकार श्री निश्वर खानकाही के नाम



इस शहर में कभी अब जो तुम आओग  
 हर तरफ़ इन अघेरा में टकगओग  
 बच्चे-बच्चे की आखा में दहशत यहा  
 तुम भी ताहफ़े में दहशत निग जाओग  
 इस शहर में हवाआ की रफ़तार, उफ़ !  
 "सब" हत्ये चढे तो बिखर जाओग  
 हाथ रख के कभी दिल में मत सोचना  
 बग़ना अपनी निगाहा में गिर जाओग  
 अपन साथ में लागा की परहूज है  
 इस शहर में किसे प्याग़ मिखनाआग

जब तक अलग-अलग रंगों व परचम तुम सहाराभंग  
 जब तक मजहब व प्याना में जहर यहा छलकाभोग  
 भूखी महना की उम्मीदें बुखी स्वाद के घर टूटे  
 किम खबर थी तुम मेहनतगम मजहब में बट जाओग  
 अपनी-अपनी जान में बाहर निकल व मार माप चला  
 वर दरीच गाना बगना घट घुट धर मर जाओग  
 रंग रिरंग बाज ह मय रागज र कूना जगे  
 बागज व कूना में बाना मशरू कान में पाओग  
 दर रंग का जान बाव लहू रखकर जा लता  
 मरिज पाग मितार नाना जह तुम बापिम आओग

जिंदगी मुश्किल नहीं पर दर्द न यूँ भूँदा करो  
घर तलक आए कोई एक रास्ता छोड़ करो

एक दरवाजा खोलकर दुनिया से रिस्ते जोड़ लो  
जिंदगी एक फज है इस फज को पूरा करा

हो सके तो बादलों को दूँड लाओ दोस्तो  
धूप में तपती हुयी धरती से मत शिक्का करा

पाव की जजोर मत बनने दो मजहब को यहाँ  
जैहनों की बिडकिया हरदम खुली रखना करा

धूप में मत खोलिए रिस्ता के कुछ छाते नये  
मिलमिले वन जाए तो कुछ फामले छोड़ा करो

आती नस्लों को मिन हसती हुयी यह जिंदगी  
इस तरह ने खुशनुमा हालात तुम पैदा करो

जिम बदल टहगा हुआ है नील का पानी यहाँ  
एक पत्थर पेंक्कर हलचल महा पैदा करे



तुम युद्धा दत्त हो अक्सर फूँकर एक रोगनी  
हम जलायेंगे भगर गावों शहर एक राशनी

तुम हम अधियार के दशन कराना छोड़ दो  
दखत ह आजकल हम पगतर एक रोगनी

अब हमारी जिंदगी भी खूब निखरेगी महा  
मुटिठिया म क द मूरज बाग पर एक रोगनी

अब हमार होसला का जिक्र है चारा तरफ  
और बितन तिन रहगी बगदर एक रोगनी

हर तरफ हर सिम्त स हर रास्ते से आ मिलो  
और बितन दिन चुराएगी नजर एक रोगनी

अफवाहा के इस मौसम में सच्ची बातें लिखना क्या  
 मुह मागे है दाम झूठ के सस्ते दामा बिकना क्या  
 थोड़ा और बड़ोस आग तो मज्जिन दिख जाएगी  
 उनके कदम हो माना लेकिन बीच राह में रुकना क्या  
 बीते मौसम की तल्बी को बेहतर हो बिसरा दें हम  
 वही पुरान किम्से लेकर रोज-रोज का झखना क्या  
 हमने तेज हवाआ के रुख पर भी दिए जलाए ह  
 फिर पथरीली राह में रुककर पाव क छाने गिनना क्या  
 नयी उम्मीदें, नय तरान नयी उमगा की खुशबू  
 वही पुरानी बातें यागे नयी गजल में लिखना क्या

हर एक गनी मुखातिब हमसे हर दरवाजा खुला मिन  
आगन-आग प्यार मुहब्बत का गुलदस्ता मजा मिले

यह मौसम सच्चा मौसम हो बाकी सब कुछ धोखा हो  
मेरा पाव अगर फिमले तो उमके नब पर दुआ मिल

दुश्मन का घर जान के जिसका आज जलान आए हो  
ऐसा ना हो इसी के भीतर तुम्हे तुम्हारा खुदा मिन

हम पत्थर दिल मोम की सूरत पिघल पिघलकर बहते हैं  
जब आखो के आगे कोई लावारिस की चिता मिने

क्या फिर ऐसा होना पारो ! हर सूरत नामुमकिन है  
हर चेहरे पर केवल उसका असनी चेहरा मजा मिन

सब कुछ एक नजर आता है बाहर भी और अंदर भी  
रंग वही है रूप वही है फिर भी भीरत जुदा मिल

नही दोस्ती, भाइचारा, रिश्त अब  
चनो बदलन नही पढ़ेंगे चेहरे अब

ऐसा सूखा पड़ा दिला की धरती पर  
आँखें लिखना भूल गयी हूँ कसरे अब

सन्नाटो के शहर में आहुट कैसी है  
चौक-चौकफर जाग रहे हैं कुत्ते अब

हमका वह औकात बतान आए है  
फूँसी पर तोहमत धगते हूँ भबरे अब

हर मुँहेर पर गिद्ध दिखाई पड़ते हैं  
सगे, उड़ेंग यहाँ लहू के छीटे अब

जिन दीवारा पर थ थम के छद लिखे  
उमप लिखे है चंद मजहबी नारे अब

राक्षसी के लिए कुछ न कुछ कीजिए  
अब अधेरा की सत्ता बदल दीजिए

कल के अमृत की खातिर, मर दोस्तो !  
इन हवाआ म पैना जहर पीजिए

है गरीबी से सटन की जुगुअत कहा  
घम के नाम पर सर कटा लीजिए

मुल्क सारा का सारा जुनूनी हुआ  
होश आए इसे जतद कुछ कीजिए

जेहना म धूणा के सिवा कुछ नहीं  
आती मस्लें हो बहतर दुआ कीजिए

छटपटाकर बठ जायेंग यहा  
पख फट जाण तो जायेग कहा

और कितने दिन जिएगी रुबाब पर  
बुझ रही है अब शहर की बिजलिया

खोलन वाल उलझ कर रह गए  
इस कदर उलझी हुयी थी गुस्सिया

आग के नजदीक मैं आया ही था  
आ गया शोला सपक्कर दरमिया

सीकचा पर सर पटक देगी हवा  
बद मत करना कभी ये खिडकिया

हर तरफ आलम वही दहशत वही  
सोचने है और अब जायें कहा

दोस्ता अब रुदन है हमी की जगह  
वस्तियों में मिला शम खुशों की जगह

जेहना में अधेरा बं जाने लग  
धुध ही धुध है रोशनी की जगह

हम शहर में मुहब्बत के गुल साए हैं  
लोग पत्थर न हो आदमी की जगह

दोस्तो ! कश्तिया का सफर अब बहा  
अब मका बन गए हैं नदी की जगह

हमका इसने सिवा और क्या चाहिए  
जिदगी चाहिए जिदगी की जगह

सोचत है कहर यह गुजर जाए ता  
चलत चलत हवा गर ठहर जाए तो

डूबन क हराद स जाए मगर  
चडते दरिया का गुस्सा उतर जाए ता

तुमन बरसा जतन स बनाया जिसे  
वह नगर पत्थरा का बिखर जाए ता

कल्पना कीजिए आप महरा म ह  
दूर स कोई चहरा गुजर जाए ता

आधिया का बुलान की ज़िद मत करा  
एक नहा सा नीपक सिहर जाए ता

लग कस यहा जी मर्केग भला  
एक बहर आए ओ एव कहर जाए ता



दामन में खुशबू की दोलत भर लाए  
 पन दो पल ही सही गरीबी मुक्ताए  
 हम नफरत की आग बुझाकर छोड़ेंगे  
 हाथ हमारा अगर जने तो जल जाए  
 सूद चुकान की खातिर फिर बज लिया  
 नए साल ने ऐसे भी दिन दिखलाए  
 क्या देखा क्या समझ गए क्या जान गए  
 जितन थे चुपचाप लोग सर चिल्लाए  
 ऐसा ता दस मुल्क में ही हो सरता है  
 हार किसी का गल किसी प पट जाए

भुवि ला व बीच घबराए नही  
 फूल से वह दा कि मुरझाए नही  
 गुम्बदा म छूटते रहिए उह  
 जा परिदे लीट कर आए नही  
 चाहत थ लाग हगामा उठे  
 जरुम लेकिन हमन दिखलाए नही  
 क्या कई जाहू हुआ सच बात को  
 बोलने म लोग हकलाए नही  
 य क्या कम है गर नही हल कर सब  
 दास्ता न प्रश्न उलझाए नही

मेरे जर्मो की कुछ एस दवा किया करती है दुनिया  
 अमत-अमत कहकर मुझको जहर दिया करती है दुनिया  
 अफवाहा की नयी किताबे राज लिखा करती है दुनिया  
 पढ़ने वालो को बहका कर फास लिया करती है दुनिया  
 मंदिर, मस्जिद, गुहद्वार का अलग अलग बतलाकर यह  
 चलती सासो के भस्कर का लूट लिया करती है दुनिया  
 बीत गए वह दिन जब बस्ती आग बुझाने आती थी  
 आग बुझाने के एवज अब हवा दिया करती है दुनिया  
 हरी भरी रिदता की धलें जब पीला पड़ जाती है  
 तब दीवारो पर तस्वीरें टाग निया करती है दुनिया  
 शाम ठले साहिल की ठंडी रत में अपनी अंगुली में  
 मैं अप्सान लिख देता हूँ बाण लिया करती है दुनिया

लीट आते हैं जब सफर वाले  
गस्ता पूछते हैं घर वाले

गाव, पगडंडिया बफा की महक  
ब्याब बुनते हैं मज शहर वाले

मक-ब-मक क्या हुआ बगीचे के  
पेड़ सब गिर गए समर वाले

जिंदगी एक उदास बस्ती है  
दख पान है कब नजर वाले

शहर सुनसान हो गया है विनोद  
होठ चुपचाप हैं खन्नर वाले

अबक मत बदले ता शायद यह नया हा जाएगा  
सूखता पौधा सहन का फिर हरा हो जाएगा

आज जो झाका हवा का छू रहा है प्यार से  
कन यही आधी की सूरत सरफिरा हो जाएगा

मर झुकालोग तो सब रिस्त रहग बरकरार  
मर उठाओगे तो हर मजर खफा हो जाएगा

ददमदी और बफा सब एक तमाशा हा गए  
क्या खबर की आत्मी इनना बुग हा जाएगा

दिल का दरवाजा खुला रखो कि आमदरफ्त हो  
आज जो है मोतबर कल बबफा हो जाएगा

वारिशे आइ तो सब रमीन चेहर धुल गए  
क्या खबर थी अबके मौसम बेमजा हो जाएगा

हुलस हुलस कर नदी झुझी की भर जाएगी जीवन में  
टुकड़ा-टुकड़ा धूप गिरे गर इस बर्फिले आगम में

बद दरीचे वाले घर भी आखें खोल पुकारेंगे  
आवारा माँ हवा का झाँका उतर आग इस मीनत में

अपने आपसे बातें करना बड़बूट छूट निगलना है  
फिर भी मैं बातें करता हूँ अपने आपसे दर्पण में

उनसे पथरीली राह का सफर कहा तक तय होगा  
जिनके पाँव धके जात थे चलते-चलते मधुवन में

दुनिया भर की दुनियादारी बाधे पर नटकाए है  
मेरा बच्चा बूढ़ा होना सीख रहा है वचन में

समझौता की राह पकड़ ला तय मजिन हाँ जाएगी  
बहुत कठिन है राह डूबना दोस्त बना के जानन में

जिंदगी क्या है बताना चाहिए  
एक जम्मे नी बनाना चाहिए

शाम होत ही बुआ भग जाएगा  
खिड़कियो को खोल आना चाहिए

हम भी चाके न जो अकसर मोचते है  
पत्थरो का भग झुकाना चाहिए

बल तलक हम हासिए के लोग थे  
अब हम सारा जमाना चाहिए

हो उम्मीदा का किरण हर शब्द में  
आज ऐसा गीत गाना चाहिए

निख सका ता अघेरा म जुगनू लिखो  
मत किमी की हथेली पे आसू लिखो

सूखती हर कली को नए रंग दा  
पत्ती पत्ती के अघरा पे खुशबू लिखो

वो किनारा नजर आ रहा है हम  
अपने हाथा वो तूफा म चप्पू लिखा

अब ता बस एक हैरत लगे जिंदगी  
तुम भी इस दवाब को एक आदू लिखो

अब हथेली प पानी की बूंदें बहा  
वो बस है कि आखो म बानू लिखो



गत अकेली घटा अकेली हवा अकेली बस्ती में  
हर डक बम्हा तनहा-तनहा मिला अकेली बस्ती में

आहट है पावा की लेकिन दस्तक समझ रहा हूँ लोग  
मानो-माना गज गहो है मदा अकेली बस्ती में

मलाटा मे ? दीवारा मे ? रात्रीचा म ? म म ?  
हम किससे पूछेंगे अपना पता अकेली बस्ती में

हमसाए में हमसाए या मिरन यहा कैसे हागा  
माए से माया रहता है खुदा अकेली बस्ती में

आगन-आगन देख रहा है फैला दरिया दुख्खा का  
गलियो-गलिया भटक रहा है खुदा अकेली बस्ती में

हम अकमल चीख सुनत हैं म्वाबो में, बेदागी में  
साय साय बरता रहता है खला अकेली बस्ती में

जीना जग हुआ काटा पर ता भी जीवन जी सेंग  
लेकिन ये दावा है अपना स्वाब गुलो के देखेंगे

रग बदलत ही मौमम के बस्ती रग बदलती है  
जब पनस्र के मौमम से नौन है अपना सोचेंगे

एमी एमा बातें कितनी मोच के घर म निकले थ  
छुशी जग मिल जाओगी ता बस्ती बस्ती बाटेंगे

मन क अन्तर भेन छुपा है खुशिया का और दुखो का  
पागल दुनियावाले नेकिन बाहर-बाहर दूकेंगे

माम क वधन उनसे उलझ मजे सजाए चेहरे है  
किम यकी है कन का मूरज सारे मिनकर देखेंगे

हम मूखे पत्ता की मूरत तब हवा मे उडते हैं  
हवा जहा ठहरगी जाकर हम भी वही प ठहरेंगे

कभी मासूमो-बेकस पर कभी बिस्मिल प पड़ता है  
 तुम्हारे हाथ का खजरा बहा कातिन प पड़ता है  
 मुलक उठती है धरती दूर तक वारिष के मौसम में  
 तुम्हारी जुल्फ का साया कभी जो दिल प पड़ता है  
 समझकर मोचकर कीजे यहा शिकवा शिकायत भी  
 जरा सी बात से अतर बटा हामिन प पड़ता है  
 किसी दिल में उतर जाती है य तस्वीर बनकर भी  
 यहा अक्से-बफा एक बार ता हर दिल प पड़ता है  
 मेरे दोरो में अपन दुख नजर आत है दुनिया को  
 अमर मेरी कहानी का भरी महफिल प पड़ता है

भाग जलती है मगर उससे धुआ उठता नहीं  
इसलिए शायद यहाँ अब काफिला रुकता नहीं

जो भड़ककर जल गए हैं रात तक बुझ जायेंगे  
जो दिया मद्धिम जलेगा सुबह तक बुझता नहीं

इस पुरानी लीक पर चलन के हम आदी नहीं  
कुछ नया कर जायें इसका हौसला मिलता नहीं

ह किस तुझको बया करने की हिम्मत ज़िदगी !  
हम जा रखते हैं वो सहजा दूसरा रखता नहीं

बया भरोसा अब करें उसका जो कोसा दूर ह  
आदमी की चीख ही जब आदमी सुनता नहीं

तोड़ डाले ह सभी रिदत जुदा सबसे हुए  
दूधत हैं अब उसे जिम्मे कोई रिहता नहीं

एक एक पत्र में जीवन जीना एक एक पत्र में मरना सीख  
 सूरज-सरज तपने वाले, दरिया दरिया बुझना सीख  
 रख बी दुनिया जगमग-जगमग, भीतर भीतर तनहाई  
 महानगर में आन वाले तू भी मकस करना सीख  
 बसबा बसबा अफवाहे हैं, गाव शहर इमशान हुए  
 अखबारों में कालम-कौलम, लड़ क बनने पढ़ना सीख  
 आन वाली राह सहूल है इसका किस भरासा है  
 तू पत्थर है मोम नहीं है तज धूप में बनना सीख  
 रुत बदलेगी रख बदलेंगे, मिलन वाले छूटेंगे  
 सबके साथ अगर चलना हो तू भी रंग बदलना सीख  
 आया-आया काले परदे, काना काना मरगोशी  
 अधी बस्ती के वाशिर ! किम्स कहना-बुलना सीख

रिश्ता मे घुटन आगन-आगन  
तपता है वदन सावन सावन

मासा की धवन जीवन-जीवन  
घुटता है धुआ चिलमन चिलमन

फली है उदासा गलिया म  
विखरी है लिजा गुलशन-गुलशन

इकजत का दिखावा क्या कहिए  
धव है यहा दामन-दामन

रफू से वचाना मुश्किल है  
उधडी है हया सीवन सीवन

काश कि भाई सूरत हा  
आगिर जहर य अमृत हो

प्यार बन बस्ती-बस्ती  
अपना शहर मुहब्बत हा

नफरत क शांसे बुझ जायें  
हर घर प्यार का पवत हा

सुख और दुख मिसकर बाटे  
गबकी एक सी बिस्मत हो

मदिर मस्जिद साथ सज  
सब धर्मों की इज्जत हा

हवाओ में जहर है

मैं बस्ती तुम सागर हा  
ऐसा कभी मुकद्दर हा

बीत चहर घुघल थ  
आती सूरत बहतर हो

पाव खल्व के बब पाए  
इतनी बड़ी ता चादर हा

सबका भिन्न खुशी थोड़ी  
सबका भाव्य दरान्न हो

पीछे बस्ती खेत हर  
आग खुला समदर हा

घर घर की दीवार हट  
अबब एमा मजर हो



गजला म फसाना म गीता म बया करिय  
 जो आग का बिस्मा है शाला म बया करिय  
 इव दिल म सपवती है हर दिल म घघकन का  
 वो आग जो भडकी है सीना म बया करिय  
 हर लम्हा कुचलत है कुछ नूट सामाशी का  
 जा रात गुजरती है गावा म बया करिय  
 जो हवाव तरी आख इस दम भी सजाए ह  
 इस शहर की सडका पर नारा म बया करिय  
 तारीक फजाआ म उजली सो किरण क्या ह  
 मायी ये सहर ही है घुशियो म बया करिय

आग ही आग हा फिर भी जलत नहीं  
क्या चिन्ता वो तरह तुम धधकने नहीं

य हवाय बुझान लगी ह चिराग  
इन हवाआ का हम्ब क्या बदलत नहीं

भर अधेरा न तान ह चारा तरफ  
इन अधेरा व फन क्या कुचलत नहीं

तुम किमी हाथ व हक खिलीन नहीं  
बान इतनी भी है क्या ममझत नहीं

ध्वाव तुममे हैं राशन नया भार के  
क्या बदलन का मव कुछ बदलन नहीं

हर तरफ शार ही शार है आ मिला  
क्या तुम अगन घरा म निबलत नहा

कन गो-या दया द चुका है सदा  
क्यू मधमन नहा, क्यू मभसते नहीं

मुस्तहक है हम हमारा जाम हमका चाहिए  
मैंकदे की खुशनुमा शाम हमको चाहिए

एक कच्ची उम्र के बच्चे न बल मुझसे कहा  
भूख लगती है ऐ साहिब ! काम हमको चाहिए

मात देवर खिदगी का उसके ही भदान पर  
मग्ने वाले न कहा ईनाम हमको चाहिए

कितनी महरमी है तरे शहर के हर बाग में  
खुशनुमा मादो से महकी शाम हमको चाहिए

हम परिदे ह अमन के फिर रह ह जा ब जा  
हम उतरना चाहते ह बाम हमको चाहिए

खुशनुमा शाम शहरा में ठसती नहीं  
गाँव की गल काटे भी बटती नहीं

क्या खबर भी कि एमी भी रुत आएगी  
अर नहीं मूखती ह मबनती नहीं

आग भी है लहू भी है, है जिस्म भी  
आमो देखें ये शम्मा क्यू जलती नहीं

आआ छेड़ें तगन उम्मीदा भर  
छोड़ २ रहगुजर आ कि बनती नहीं

क्या हवाआ के खूब तुम बदलन नली  
जिंदगी हाँसो मे निबननी नहीं

बेवफा उसको कह गर तो खफा होती है  
जिंदगी चार कदम चल के जुदा होती है

एक मुद्दत में चुने हमने जहा व आस  
ग वो पजी है जो मुश्किल से जमा होती है

कान सुन पाएगा पत्थर की गली में इसको  
यू भी त्नामोश बहुत निल की मदा होती है

हमको हर राज मुलाता है थपकिया देकर  
हमका जो गोज जगाती है हवा हाती है

हमको गता स नए हवाव मिला करत है  
हमको मूरज में नयी आस अता होती है

हम कहा मारी हकीकत जानत है  
पर तुम्हारा दर हम पहचानत =

तुम शरीफे-शम हमार हा खबर है  
हम तुम्हे खुद से अलग कर मानत है

हा कि हम कुछ मोचकर हा दरबार है  
यू मुमाफिर घर का रमना जानत ६

आपका क्या फर हा छोटे-छर का  
आप तो मिकवे बनाना जानत ७

है कहा वा लोग हर एक पूछता है  
जो हवाओ मे जहर का फानत ८

हम जा ठहर हुए ह किधर जायेंगे  
जो मुसाफिर ह वो दरबजर जायेंगे

हमको डर है जमाने की रफ्तार से  
इसके हत्ये चले तो रिखर जायेंगे

तुम हवाआ म दामन उडाल चला  
जिनपे साया पड़ेगा मबर जायेंगे

जब उस भी किसी खाफ का डर नहीं  
हम भी अपनी हदा म गुजर जायेंगे

इतका अपनी पनाहा म न मीजिए  
ये दिए आधिया म सिहर जायेंगे

गाव गहर बस्य बस्ती म मिलकर साथ चलेंग सोंग  
 इद्रधनुष सा छिन उठेंगे गोरे नील काने लोंग  
 जो पीछे ही रह जाने है उनको आग आने दो  
 अपना रम्भा बना ही देंग आग आन बाने लोंग

उम रुदाव का बम्मी ममक्षा जिसम प्यार सिखाई \*  
 मुझे मिले ह बम्मी-बम्मी आग रगान बाने लोंग

पल गजर का फर्र नगरी दुनिया भर क सेना म  
 स्नि म गमा मोच रह है नफरत बान बाने लोंग

मरा नाम मिटा \* है खुद ही अपन जेहन म  
 ताहमत मोमम पर रखते हैं नबश मिटान बान नाग



रग कुछ अदाज कुछ, सून्न जुदा छुशबू अलग  
बया गजब है हो गया है आख से आम् अलग

पूछत ह मोग अब मिनत ही मरी खगिन  
बढ रहा है रूम नगर के मर प भी जादू अलग

उस समय कोई नहीं जाया मर नज्दीक भी  
बनत वो जब हो गए थ जिम्म म बाजू अलग

भात था दरिया हवा बहना था सार साथ थ  
जब उठा तूफान तो कश्ती से थ चप्पू अलग

रास्ता है शहर का और तीरगी चारा तरफ  
हो चल है अब तो सार गाव के जुगनू अलग

एक वो भी बक्त गुजरा ह कि जिसका खौफ है  
गस्ते से रास्ता हर म् से थी हर म् अलग

मेरा तन पिघल रहा है  
बिना अनाव जल रहा है

बही डार दूटती है  
बार्ड हाथ मल रहा है

मुझे दखिएगा जब तब  
मेरा रूप ढल रहा है

महा वामुणी मैं देखो  
सूफान घन रहा है

जग तीरणी मैं बहना  
म चगग जल रहा है

मभी आँख बन्द थे आना  
मरा गाव जल रहा है

कुछ चहर पहचान म रख  
शहर शहर य ध्यान म रख

बागज ब ह ? फूल ना हैं !  
इन्ह सजा गुलदान म रख

प्यार बफा गिस्त नात  
एक एक भ ट्रकान म रख

दगिया पार उतरना है  
ता कन्ता तूफान म रख

गत छपा ने पहलू मे  
सूरज रोशनदान म रख

चाद सारे देखकर सब तक गुज़ार ज़िदगी  
मैं किसे अपना कहूँ किमको पुकारूँ ज़िदगी

जब खबर है आघिया पुरजे उठा देंगी मर  
किसनिए, उफ ! सब तलक खुद को मबारूँ ज़िदगी

तू तो बस पत्थर की भूरत की तरह बजान है  
किमलिया मैं आरती तेरी उतारूँ ज़िदगी

किस मितमगर का पता दूँ तुम्हार शहर में  
नीर किम बेदद का दिन मैं उतारूँ ज़िदगी

बकन क्या सब दोस्त भी आखिर जुदा भुलस हुए  
तू बता अब रास्ता किमका निहारूँ ज़िदगी

दमिया में हम नगर के द्वार खुलत ही नहीं  
मात, किम दीवार पे मर द के मारूँ ज़िदगी

आ भी जा हम उम्र की बीगनिया में आ भी जा  
गत दिन आठा पहर तुमका पुकारूँ ज़िदगी

सर से जुनून-वफा न उतर  
शाम ढले पर नशा न उतरे

दोस्त उस कहती है दुनिया  
'मा भौके' पर खरा न उतरे

बुसत शोल घघक् उठे है  
नही फलक् सं हवा न उतरे

हर मौसम में यही बुआ की  
तरा रग हिना न उतर

रह दमक्ता सूरज जसा  
रगे-हूँ-वफा न उतर

जगल जगल धूप नहा की  
महरा-सहरा घटा न उतर

रग बदलू ता वही रग पुराना आए  
बस इस शहर म जीन का सलीका आए

आख छोलू ता उदासी का समदर देखू  
आख मूढ़ ता नजर चाद सा चेहरा आए

घर की दीवार पुकार ता मैं अदर जाऊ  
अपने ही दर पे खड़ा हूँ कि बुलावा आए

बस कह दू कि अघेग का मफर घरम हुआ  
जब उजाला न उजाने का परिदा आए

मे भा बजारा मिजाजी म छुड़ा लू नामन  
मर रमस म अगर टीर ठिकाना आए

उदास जाख का मजर पुकार लता है  
कभी-कभी ता मुझे घर पुकार लता है

सभी ता आस का दीपक जलाक चलत हैं  
किसी किसी का मुकद्दर पुकार लता है

किसी भी धूम प इतना नहीं जमान म  
बिफरती मौज का मागर पुकार लता है

घरा प टूटकर गिरती ह चुप छसाआ की  
जमी का जब कभी अबर पुकार लता है

तुम्हार शहर की रगीन रीनका म विमोद'  
भटक भी जाऊ मगर घर पुकार लता है

दिन निकलत ही परिद उड गए बठे हुए  
वाफिन मजिन की जानिन चल पडे ठहर हुए

घर की ओवारें भी शायद अब न पहचान मुझे  
एक मुरत हा गयी है मुखवा घर देखे हुए

बदन की बाहा में बाह हासकर चरता हूँ मैं  
अलविदा कहन है मुझको वाफिन ठहर हुए

छटपटाकर उड गया धार्म परिष्ठा बाम में  
छाहकर आगन में मंत्र उजान पर बिखरे हुए

कौन नर धाव दमगा शहर बीमार है  
आप अपना ज़रूम पर मरहम लगा मते हुए



पत्थर की हवसी से निकला है हवा बनके  
शीशे व घराया प टूटेगा कजा बनके

कुछ दर अगर बरस मो प्यास तुम्हे शायद  
वो प्यार का बादल जा छाया है घटा बनके

क्यू बज्रम बहारा म पत्थर की तरह बैठे  
महको भी किसी गुल से खुशबूए बफा बनके

उस दिन को तरसता हूँ जब जिम्मा मेरा होगा  
हा दिल ता धक्का ह सीन म मरा बनके

अब और नहीं रखू पलका का तुली अपनी  
अब नींद उतर आए आखा म नशा बनके

तुम मिल जय कभी जिंदगी की तरह  
धूप नगन लगी चादनी की तरह

छोफ फला बाहर म ता इतना हुआ  
लाग मिलन लग आत्मी की तरह

मकद प्यास का बस्तिया बन गए  
जाम खाली मिन तिधनगी की तरह

हूँ अंधेरा क जगल म भटका हुआ  
बाण कोई मिन गजना या तरह

इन तरसुम गिली आम क हाट पर  
एक तराना जगा आत्मी की तरह

मजिदा तक मकर काई मुश्किल नहीं  
इसका न कर बना बापगी भी तरह

मर माथ माथ थी जिदगी  
मुझे याद है य खयाल भी

तेर हाथ गाया कि जाम ह  
मरी दस्तारम म है तिरनगी

मैं खयाल बुनता हूँ दिन ठन  
मरे गीत सुनती है खामुशी

वा बहा गए जा मुरीन थ  
य सवाल करती है शायरी

इसे हन समझते हा, ठीक ह  
मरा जिदगी है सबान भी

बली उन मकामा का फल करें  
जहा पाव चूमगी रागनी

उत्तम जिस की खामोशियाँ मैं दब बतकर उभर रहा हूँ  
मैं गहर पानी की तह में छप कर किसी समझ को डूबता हूँ

किसी की आँखा ने ब्रज कहा है कि मग जीना ही सम्भव है  
मुझे न जान य क्या बगा है मैं अपने मकसद का पा गया हूँ

निखर गयी है वदन की रगत कुछ जाग चहुरा चमक उठा है  
मैं एक पथर सा जब से दरिया की तेज धारा में आ गया हूँ

वो मेरे चेहरे की पूना जमी शगुफ्तगी में यूँ खो गया था  
उस में जमे खरब नहीं थी, मैं एक लिन व निगा खिला हूँ

जो एक खिडकी हो बंद मुँह पर तो एक दरिवाज़ा हाँ बाँवही पर  
मैं अपने भीतर की आँख मूढ़ तो अपने बाहर की खोजता हूँ

किस हान म जिंदा हू कुछ इसका पता लिखू  
वो रेत का घर निक्के में मेरा हवा लिखू

हर बार वही सपने धारा म उभरत हूँ  
मुदत से परेमा हूँ एक स्वप्न नया लिखू

उन शोल गिगाहा स नह दो न इधर दूँ  
मैं आख के डोरा म जब मुख हवा लिखू

तादाद बढा लू मैं कुछ और गुनाहा की  
वो मेरी गता निक्के म उसको सुआ लिखू

मैं रोज बदलता हूँ कपडो की तरह घर को  
अब कौन मी बम्ती का किस घर का पता लिखू

किस तरह जी रहा हूँ य चर्चा नहीं  
हान जी का किसी न पूछा नहीं

बी मेरा रास्ता देखता ही रहा  
मैं ब्याली म जंगल से नीटा नहीं

अबके ऐसे शहर मे फस ह जरा  
दिल म चाहत लिए कार्क मिनता नहीं

हम कि दहशत मे आखा का भीचे रह  
हमन मजर जो दिलकश था देखा नहीं

तेरी यादो के जुगन है माथी मर  
मै मफर म ह नेकिन अकेला नहीं

इसकी कीमत नहीं कुछ भी बाजार म  
जिंदगी की एवज कुछ भी मिलता नहीं

दिन म बीत दिना के उजाल लिए  
 सामन जो अघेरा है देखू उम  
 घर के प्रकट कमरे के माहील म  
 वक्त रूठा हुआ है मना लू उमे

आहटें दूर जात हुए पावा की  
 दिल के काना से मैने सुनी थी मगर  
 हाठ अपने को सख्ती से भीचे रह  
 निल य कहता रहा कि पुकारू उसे

मै कि पहर प जागा हुआ हूँ अभी  
 माथ सोया पड़ा है थका हममकर  
 अनसुबह चल पड़ेग यहा से कहीं  
 रात ठाने नगी है जगा लू उस

निन के जरमा का ताजा लहू दखना  
 कितना काला है तारीक घर की तरह  
 एक स्तरा जा आखा स टपका अभी  
 मुख हाठा की लाली से रग न उमे

जिदगी बाज़ तरा ह बार गरा  
 इस जमान के कमजोर काधे बहुत  
 एक मुह्त म चित्ता यही है मुझे  
 अपन मजबूत काधो प रक्खू उसे

दिल म चाहत लिए कोई तनहा फिर  
एक पत्ता हवा म अकेला फिर

शिदगी हुमा बाटी है कुछ इस तरह  
जैसे शम्मा लिए कोई अघा फिर

जबके नहरा प कालिख पुती है यहा  
हर कोर् अपनी सूरत छुपाता फिर

म नि निकला हूँ यू जुस्तजू म तेरी  
जिस्म का दूढ़ता जैम माया फिर

हप्पा घर फूँकर देखना ही पडा  
बस्ती बस्ता लिए तुम तमाशा फिर



बड़ा सफर हो तो प्यास गुजरे  
समाम चेहरा सँ आस गुजर

हवायें मुदत सँ दम बखुद ह  
बभी य मौमम उन्नास गुजरे

क्या नाइ चीखा है आममा पर  
जमी के होशोहवास गुजर

नजर के आग में भीड़ गुजरी  
मजे-मजाए निबाम गुजरे

बिमो न साचा बभी नहीं क्या  
नमी की आग़ा म प्यास गुजर

रका हुआ है यह काफिला भी  
हवायें टरनें तो साम गुजरे

/ फवाजा में उहर है

उदासी में डूब हुए जंगल में हवा भी तेरा नाम लेकर पुकारे  
कोई किस तरह तेरी पादों से छूटे, कहा दिन बिताए कहा शव गुजारे

मरा मुश्किले इतनी आसा नहीं कि मैं क्षणकू पसक आर बदल जाए मौसम  
आहिस्ता-आहिस्ता बदलेंगी चीजें कोई लाख पत्थर प सर दे के मार

भटकते भटकते थके जा रहे हैं सफर खत्म होता नहीं ज़िन्दगी का  
हम रोशनी की कशिश खींचती है चले जा रहे हैं इसी के सहारे

कभी खुद को सोचा नहीं उम्र भर में, कभी उसको भूले नहीं एक पल भी  
अजब कश्मकश में गुजारा है जीवन कोई किस तरह इसकी अपना पुकार

य जद्दोनहद शहर की ज़िन्दगी में ह बदली हुई गांव की भी फजायें  
कहा था गए वो मरासिम वो रिश्ते कहा बुझ गए वो दमकते सितारे

यहाँ हफ़े-हफ़े तक सलामत नहीं है  
य हकीकत भी तो अब हकीकत नहीं है

चला और कुछ दिन अधेरा मे जी लें  
अभी दिन निकलन की सूरत नहीं है

मुझे माफ़ करना मैं वीरा में खुश हूँ  
मुझे घर बदलन की आदत नहीं है

मैं कैसे जिऊँगा तुम्हारे शहर में  
यहाँ बोनन की इजाजत नहीं है

पड़ी सोच मद्धिम हुए तार बील  
कि अब शायरी में क्याबट नहीं है

मभी छुदफरबी की दुनिया में गुम ह  
किसी को किसी की ज़रूरत नहीं है

दिल में हूँ परछाईयाँ जब तक दरवाज़े की  
 पानियाँ में जिस तरह सूखती दिखें मीनार की  
 याद यूँ आई कि जिस्मों का वह कमर हिल गए  
 दब यूँ गूँथी कि इतने गिर गयी दीवार की  
 हाँ तर एहसान का साँप तल जीते हैं हम  
 है कहाँ ज़ुरखत दिन कमजोर में इनकार की  
 आज जान क्या कहें टूटा हो दुनिया पर 'बिनोद  
 आज मूरत सुबह से देखी नहीं अलवार की

नाग होत हा हमम ता हा बदगुमा  
हमने हक के लिए गोल दी है जुना

आग हर दिस म शायद सुलगन लगा  
उठ रहा है यहा मे बहा तक धुआ

आज तान ह सग पाव की धूल न  
आज बदमा के नीच है दाना जहा

किसलिए जिस्म कलिया के मोचे गए  
किसलिए फूँक डाली गयी बस्तिमा

जिस्म छलनी हुआ, चाक दामन हुआ  
और कितनी उड़ेंगी मरी धज्जिया

दिन बन पागला की तरह धूमना  
गत भर ढूँढना मजिले-बनिशा

कभी मक़दे और कभी ज़ाम बदले  
ठिकाने तुम्हारे हरेक शाम बदले

तरी हर नज़र अजनबी सी लगी है  
तेरी हर अदा न भी पग़ाम बदले

हम क्या हवावा को भी है शिकायत  
तेरे घर ने अक्सर दरो-ज़ाम बदले

तेरा कोई बदनाम मिलता नहीं है  
तेर आशिको ने भी अब नाम बदले

मदारी था मैं अब बना हूँ ज़मूरा  
कहा तक काई इन्क मे काम बदले

जिम्मा मटवा ब जल रह है यहा  
मर प मूरज उबस रह है यहा

शाम ठही हवा की आणगी  
हम उम्मीदो प पल रह है यहा

आदमी रुक गया सा सगता है  
मिफ मिक्के ही चम रह है यहा

हम जो सभले तो क्या तअजुब है  
गिरन बाने मभन रह है यहा

मीममा न मिखा दिमा शायद  
रग चेहरे बदन रहे है यहा







